No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-1

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

10611

दिसम्बर, 2017

एम.एच.डी.-1 : हिन्दी काव्य-1

(आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल **चार** प्रश्नों के उत्तर देने हैं । **प्रथम** प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : *2×10=20*

(क) जाग पियारी अब का सोवै ।
रैन गई दिन काहे को खोवै ।।
जिन जागा तिन मानिक पाया ।
तैं बौरी सब सोय गँवाया ।।
पिये तेरे चतुर तू मूरख नारी ।
कबहुँ न पिय की सेज सँवारी ।।
तैं बौरी बौरापन कीन्ही ।
भर-जोवन पिय अपन न चीन्ही ।।
जाग देख पिय सेज न तेरे ।
ताहि छाँड़ि उठि गये सवेरे ।।
कहैं कबीर सोई धुन जागै ।
शब्द-बान उर-अन्तर लागै ।।

(ख) किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी ।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी ।।
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी ।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागिते बड़ी है आगि पेटकी ।।

(ग) म्हाँ गिरधर आगाँ, आगाँ नाच्यारी ।।
णाच णाच म्हाँ रसिक रिझावाँ प्रीत पुरातन जाँच्या री ।
स्याम प्रीत री बाँध घुँघर्याँ मोहण म्हारो साँच्यारी ।
लोक लाज कुलरा मरजादाँ ज़गमां णेक णा राख्यौरी ।
प्रीतम पल छण णा बिरारावाँ मीरा हरि रँग राच्याँरी ।।

(घ) झलकै अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छ्वै ।
हँसि बोलन मैं छबि फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै ।
लट लोल कपोल कलोल करै, कल-कंठ बनी जलजावलि द्वै ।
अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहे मनौ रूप अबै धर च्वै ।।

2. 'पृथ्वीराज-रासो' की लोकप्रियता में साहित्यिक और साहित्येतर परम्पराओं के योगदान पर विचार कीजिए । *10*

3. कबीर के दर्शन का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए । *10*

4. क्या 'पद्मावत' सूफ़ी काव्य है अथवा प्रेम काव्य ? मूल्यांकन कीजिए । *10*

5. भक्ति आंदोलन में सूर का महत्त्व क्या है ? विचार कीजिए । *10*

6. घनानंद के काव्य-कौशल पर विवेचनात्मक निबंध लिखिए । *10*

7. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** पर टिप्पणी लिखिए : *10*

   (क) तुलसीदास का काव्य-सौंदर्य

   (ख) मीरा का समाज

   (ग) पद्माकर की कविता